प्रेमचंद

हिंदी में प्रेमचंद सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं और उनका "गोदान" सर्वश्रेष्ठ उपन्यास। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें "उपन्यास सम्राट" कहकर संबोधित किया था। प्रेमचंद 31 जुलाई, 1880 को बनारस के लमही गांव के एक साधारण परिवार में पैदा हुए थे। उनकी माता का नाम आनंदी देवी था। उनके पिता मुंशी अजायब राय एक डाकखाने में कलर्की करते थे। प्रेमचंद की शिक्षा का प्रारंभ एक मौलवी के मदरसे में अरबी-फारसी की शिक्षा से हुआ। वर्ष 1909 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा द्वितीय श्रेणी से पास की। प्रेमचंद का बचपन बड़ी मुसीबतों में बीता, जवानी में भी जीविका के लिए पापड़ बेलने पड़े।

प्रेमचंद ही वे पहले कथाकार हैं, जिन्होंने आधुनिक समाज में सबसे पहले स्त्री-पुरूष की समानतावादी भूमिका को समझा और वह भी तब जबकि यूरोप में स्त्री मताधिकार की मांग तो मानी जा चुकी थी, लेकिन स्त्री-पुरूष मुक्ति आंदोलनों ने जोर नहीं पकड़ा था। प्रेमचंद की पहली कहानी पुस्तक "सोजेवतन" का प्रकाशन वर्ष 1908 में हुआ, जो अंग्रेजी सत्ता के द्वारा जब्तशुदा बना ली गई। प्रेमचंद हिंदू और मुसलमान के बीच एक मजबूत संयोजक चिह्न थे। वे उर्दू में "नवाब राय" के नाम से और हिंदी में "प्रेमचंद" के नाम से लिखते थे। छोटे-बड़े कुल 15 उपन्यास, 3 नाटक, 7 बाल पुस्तकें, 10 अनुवाद, 300 से अधिक कहानियां और संपादकीय लेख, निबंध, भाषण, भूमिकाएं, पत्राचार आदि विभिन्न विधाओं में संचित हजारों पृष्ठों की विविध सामग्री के विपुल साहित्य के साथ प्रेमचंद का लेखन खुद प्रेमचंद से कहीं अधिक हिंदी की पहचान बन गया है।

उपन्यास- प्रेमा, सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

कहानी संग्रह- मानसरोवर आठ भाग तथा गुप्त धन में प्रेमचंद की सभी कहानियां संग्रहीत हैं।

नाटक- कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी, रूठी रानी।

निबंध संग्रह- स्वराज के फायदे, कुछ विचार, साहित्य का उद्देश्य

जीवनियां- महात्मा शेखसादी, दुर्गादास, कलम, तलवार और त्याग

संपादित- मनमोदक, गल्प समुच्चय, गल्प रत्न।

अनुवादित- अहंकार, सृष्टि का प्रारंभ, आजाद कथा, सुखदास, चांदी की डिबिया, हड़ताल, न्याय, पिता के पत्र पुत्री के नाम।

प्रेमचंद को पेट की असाध्य बीमारी थी। इस बीमारी के कारण लेखन में बाधा तो पड़ती थी, लेकिन जैसे ही उन्हें कुछ आराम होता वे लिखने में जुट जाते। पेचिश की बीमारी के कारण 8 अक्तूबर, 1936 को अभावों से जूझते-जूझते इस कलम के सिपाही ने अपनी अंतिम सांस ली।